18 / 07 / 74 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सम्पूर्ण पवित्र वृत्ति और दृष्टि से
श्रेष्ठ तकदीर की तस्वीर बनाना

➢➢ अपने श्रेष्ठ तकदीर की तस्वीर का अनुभव करना

➳ _ ➳ अपने श्रेष्ठ भाग्य को निहारती और लक्ष्य की स्मृति में मैं आत्मा मन ही मन खुशी से डांस कर रही हूं और वाह के गीत गाती हूं...

→ वाह मेरा भाग्य वाह जो स्वयं भगवान ने मुझ आत्मा को कोटों मे कोई और कोई मे से से भी कोई मे चुनकर अपना बनाया...

→ स्वयं भगवान ने तकदीर लिखने की कलम मुझ आत्मा के हाथ मे दे दी है...

■ एक की ही याद के बल से मैं आत्मा पुरुषार्थ कर जितना भाग्य बनाना चाहूं बना सकती हूं...

→ मैं आत्मा देहभान से न्यारी हो अपने सत्य स्वरुप मे टिक जाती हूं और बिंदु बन पहुंच जाती हूं अपने घर परमधाम और गहरी शांति का अनुभव कर रही हूं...

→ पवित्रता के सागर शिव बाबा से निरंतर आती पवित्रता की किरणें मुझ आत्मा में समाती जा रही हैं...

■ मुझ आत्मा का किचडा विकार दग्ध हो रहा है और मैं आत्मा शुद्ध होती जा रही हूं...

→ मुझ आत्मा की चमक बढती जा रही है और पवित्रता का बल भरकर मैं आत्मा वापिस अपने साकारी शरीर मे आ जाती हूं...

➢➢ अपने श्रेष्ठ तकदीर की तस्वीर बनाने के लिए चेकिंग करना

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपनी चेकिंग करती हूं कि क्या मैं आत्मा सदा स्मृति स्वरूप हूं...

→ मैं देह नही देही हूं...

→ मैं आत्मा आंखो द्वारा देखती हूं कानो द्वारा सुनती हूं...

→ मैं आत्मा कर्मेन्द्रियों की मालिक हूं...

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपनी चेकिंग करती हूं कि क्या मुझ आत्मा की भाई भाई की दृष्टि रहती है...

→ मैं आत्मा हर आत्मा के मस्तक मे चमकती मणि को ही देखती हूं...

→ हर आत्मा बाबा का मीठा बच्चा है...

→ हर आत्मा मेरा आत्मा भाई है व आत्मिक दृष्टि रखती हूं...

→ अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा की याद मे रह मैं आत्मा अपने श्रेष्ठ तकदीर की तस्वीर बनाने का पुरुषार्थ कर रही हूं...

➳ _ ➳ परमपिता परमात्मा शिव बाबा से मिली विशेषताओं को प्रभु प्रसाद समझ निमित भाव रखते निर्मान रहती हूं...

→ मैं आत्मा अपनी रूहानियत से सम्पर्क मे आने वाली आत्माओ में बल भरती जा रही हूं...

➢➢ माया के वार से सेफ रहने का यंत्र है - दिव्य बुद्धि

➳ _ ➳ मैं आत्मा दिव्य बुद्धि के यंत्र से माया को परख स्वयं को सेफ रखती हूं...

→ मैं आत्मा अपने हर संकल्प, बोल और कर्म पर अटेंशन रखती हूं...

→ मैं आत्मा एक बाप की याद मे रह 63 जन्मों के विकर्मों को भस्म कर रही हूं...

→ मैं आत्मा बापदादा के साथ कम्बाइंड रह अपनी वृत्ति और दृष्टि को सम्पूर्ण पवित्र बनाने का पुरुषार्थ कर रही हूं...

→ बापदादा का हर कदम पर साथ अनुभव करते सर्व के प्रति शुभ भावना शुद्ध कामना रखते अपनी दृष्टि को रूहानी बना रही हूं...

■ बापदादा से मिली शिक्षाओं को अपने मे धारण कर व समय को सफल कर अपनी वृति दृष्टि को सम्पूर्ण पवित्र करती अपनी श्रेष्ठ तस्वीर बनाने का पुरुषार्थ कर रही हूं...